# कम्मबत्तीसी

**सं. मुनि कल्याणकीर्तिविजय**

बत्रीस गाथाबद्ध प्राकृतभाषामय आ प्रकरणमां ज्ञानावरणीय आदि कर्मोनी आठ मूळ प्रकृतिओ तथा १५८ उत्तरप्रकृतिओ, अने ते ते प्रकृतिनी उत्कृष्ट तथा जघन्य स्थितिनुं स्वरूप दर्शाव्युं छे । आचार्यश्रीदेवेन्द्रसूरिविरचित नव्य पंचम कर्मग्रंथमां आपेल प्रकृति-स्थितिबंधना स्वरूप साथे आ प्रकरणमां आपेल स्वरूप प्रायः समान छे । परन्तु कोई स्थाने तफावत छे । जेम-

| प्रकृति | पंचमकर्मग्रन्थ प्रमाणे स्थितिबंध | कम्मबत्तीसी प्रमाणे स्थितिबंध |
|---|---|---|
| १. सातावेदनीय | १५ कोडाकोडी सागरोपम | ३० कोडाकोडी सागरोपम |
| २. नीलवर्ण नाम | १७⅓ कोडाकोडी सागरोपम | १७ कोडाकोडी सागरोपम |
| ३. कटुकरस नाम | १७⅓ कोडाकोडी सागरोपम | १७ कोडाकोडी सागरोपम |
| ४. उच्चगोत्र | १० कोडाकोडी सागरोपम | २० कोडाकोडी सागरोपम |

आ प्रकरणना रचयिता उपाध्याय श्रीपूर्णलब्धिना शिष्य श्रीभानुलब्धिमुनि छे । आ प्रकरणनो रचना संवत् जणायो नथी ।

## कम्मबत्तीसी

### ( अष्टकर्मणां प्रकृति-स्थितिस्वरूपम् )

सिद्धाण नमुक्कारं अट्ठकम्माण पयडि-ठिय(ई) वुच्छं ।
जीवाण बोहणत्थं सव्वे(व्व)दुक्खाण उद्धरणं ॥१॥

नाणावरणी तीसं कोडाकोडी य अयरमाणाणं ।
मइ-सुय-ओहीण तहा मण-केवल तीस ए संखा ॥२॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीयं दंसणा(ण)वरणं नव पयडीउ व कमेण नायव्वा ।
पत्तेयं अयराणं कोडाकोडी य तीसा य ॥३॥

वेयणीयं तह तीयं सायमसायं च हु दुन्नि पयडीणं ।
तीसं कोडाकोडी पयडि-ठिइ तीयकम्मस्स ॥४॥

मोहणीयं पि चउत्थं अट्ठावीसं च होइ पयडीउ ।
मिच्छत्त-मीस-सम्मं कोडाकोडी य सत्तिरियं ॥५॥

सोलसविहा कसाया चत्तालीसं कोडाकोडीओ ।
हास-रय(ई) दस नेयं सेसा चत्तारि वीसा य ॥६॥

पुं-इत्थि-नपुंसवेया दस-पन्नरस-वीसं कोडाकोडी उ ।
पयडीय अट्ठवीसं पुण एवं भणियं समासेण ॥७॥

पंचम आउ चउव्वि(वि)हं नारय-सुर सागराण तित्तीसा ।
तिरिय-मणुआ तिपल्लिय-ठिइकालं चउविहा भणिया ॥८॥

छट्ठं च नामकम्मं सयअहियं तिन्नि य पडियं (तिन्नि पयडियं) कहियं ।
नरय-तिरिगइ वीसं दस देवा पनरस मणुयगइ ॥९॥

एगिंदियजाई वीसं बि-ति-चउ अट्ठारसं च परिमाणं ।
पंचिंदिजाइ वीसं उरलविउव्विय वीसं च ॥१०॥

आहार तणू इक्कं तेजस-कम्मे य वीसगं होइ ।
अंगोवंग उरालिय विउव्वी(व्वि)य वीसं संथुणियं ॥११॥

आहार अंग इक्कि अह पनरस बंधणाणि वुच्छामि ।
ओरालि(य)-ओरालिय ओरालिय-तेयबंधं तु ॥१२॥

उराल-कम्मणबंधण उरालिय-तेयस-कम्मण [बंधं] च ।
उच्छं वेउव्वि-वेउव्विय वेउव्विय-तेयसबंधं च ॥१३॥

विउव्वियकम्मबंधण विउव्वितेयसकम्मणं भणियं ।
अट्ठ एसं(सिं) ठिइकालं(लो) कोडाकोडी य वीसा य ॥१४॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहारकचउबंधण कोडाकोडी य इक्कमिक्कस्स ।
अंतोमुहुत्तजहन्नं सेसतिबंधं तु वीसं तु ॥१५॥

अह संघायण वुच्छं ओरालियचउसु (चउ) संघाणं ।
वीसं कोडाकोडी आहारगइ (आहारए) इक्कं भणियं च ॥१६॥

वज्जरिसहनारायं पढमं दस बीय बार तिय चउद ।
सोल चउत्थं पंचम वीसा पुण छट्ठम दसाणं ॥१७॥

संठाणछच्च(छक्क) कमसो सम दस निगोह बार साईयं ।
चउदस वामन द्वार खुज्जा हुंडा य वीसा य ॥१८॥

वन्ना किन्हा वीसा नीला सत्तरा य लोही य ।
हालि[द] सुक्किज(ज्ज) दस कोडाकोडिठिइ(ई) वन्ना ॥१९॥

सुरहि-दुरही य गंधा दह वीसा अयर कोडिकोडीणं ।
वीसा य तित्ति भणिया सतरस कडुआ मुणेयव्वा ॥२०॥

कसाय पनरस अंबिल बारस महुरं च दस य रसधुणियं ।
गुरुआ लहुआ वीसा कक(क्क)स वीसा य मिउ दसगा ॥२१॥

सिय णिद्ध रुख(क्ख) सीया वीसा उसिणो य दसग फासट्ठा ।
नरय-तिरि अणुपुव्वी वीसा मणुआण पन(न्न)रसा ॥२२॥

दस देवाणुपुव्वी सुह-असुह विहगगई दस नेया ।
तस-बायर-पज्जत्तं पत्तेयाणं च वीसं च ॥२३॥

थिरसुभसुभगं सुस्सर-आदेय-जसा य दस दसा भणिया ।
वीसं थावरनामं सुहुम-अपज्ज-साहरणा ॥२४॥

एएसिं पि तियाणं अट्ठारस-अयरकोडिकोडीओ ।
सेसाणं छच्चं(ण्हं) चिय वीसा वीसा य अणुकमसो ॥२५॥

पत्तेयं अट्ठण्हं कोडाकोडीय(इ) वीसगं भणियं ।
एयं नाम(मं) कम्मं पयडीभणियं समासेणं ॥२६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमगोयकम्मं उच्चानीयं च वीसवीसं च ।
अट्ठमकम्मं विग्धं पंच य पयडीय(इ) सतीसा य ॥२७॥

एसा अट्ठावन्ना सयअहिया पयडिया संथुणिया ।
उवझा(ज्झा)यपुण्णलद्धे(द्धि)सीसे सिरिभाणलद्धिमुणी ॥२८॥

एया सव्वा पयडी-उक्कोसठिय (टिईए) वट्टमाणो(णा) अ ।
सामाइयं चउण्हं जीवो(वा) न कया वि पावंति ॥२९॥

बारसमुहुत्तजहन्नं वेयणीयाणं च दुन्नि पयडीणं ।
नाम-गोयं जहन्नं अट्ठ मुहुता (मुहुत्ता)य ते भणियं ॥३०॥

एगं एगं च मुहुत्तं सेसा कम्माण जहन्नकालं च ।
गुरु-लहुकालं कहिया जहा सुआ सुअसमुद्दाओ ॥३१॥

ते जीव सव्वे धन्ना जेह(हि) कम्माण सव्वपयडीणं ।
खविऊण सिद्ध(द्धि) पत्ता नमो नमो ताण सिद्धाणं ॥३२॥

—X—

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org